कारपेट से जुड़े आपके सवाल

घर के लिए आपने भी कारपेट खरीदा होगा। उसके रखरखाव को लेकर कई तरह के सवाल भी होंगे। यहां ऐसे ही कुछ सवालों पर बात कर रहे हैं कारपेट इंडस्ट्री के जाने-माने एक्सपर्ट।

■ कारपेट में किस धागे का इस्तेमाल होता है?

कारपेट चार प्रकार के होते हैं- हैंड नोटेड, हैंड टफ्फटेड, फ्लैटवीव और हैंडलूम। सभी में अलग-अलग प्रकार के धागों का इस्तेमाल होता है। सभी के मूल डिजाइन का आधार ताना-बाना होता है और अक्सर कॉटन के धागों का बनाया जाता है। जो हायर क्वालिटी प्रीमियम कारपेट होता है, उनमें सिल्क और वूल का इस्तेमाल अधिक किया जाता है।

कारपेट पर जब भी कॉफी, दूध, चाय गिरे तो उसे रगड़कर न हटाएं, कॉटन के कपड़े या टिशु पेपर से उसे सोख लें।

■ ये धागे कहां से मिलते हैं?

भारतीय भेड़ों से तो वूल प्राप्त होता ही है, कुछ अच्छी क्वालिटी के वूल का आयात दूसरे देशों से भी किया जाता है। वूल की सोर्टिंग, कार्डिंग और स्पीनिंग कर धागे बनाए जाते हैं।

■ कुछ लोग इसके इस्तेमाल से बचते क्यों हैं?

सिल्क एक पशु उत्पाद होता है, इसलिए कुछ लोग इसका इस्तेमाल करने से परहेज करते हैं। वे बांस के रेशों से बने बंबू सिल्क के कारपेट का इस्तेमाल करते हैं। वूल और सिल्क मिक्स का इस्तेमाल हाई क्वालिटी कारपेट में ज्यादा होता है। कुछ कारपेट जो आउटडोर के लिए आर्डर किए जाते हैं और

नन्द किशोर चौधरी
मशहूर व्यवसायी व कारपेट एक्सपर्ट

धूप, बरसात तथा तेज हवा को झेलते हैं, उनको बनाने में पॉलिप्रोपिलीन और थोड़े सिंथेटिक फाइबर का उपयोग होता है। हाथ से बने ज्यादातर कारपेट नेचुरल फाइबर (वूल, सिल्क, बंबू सिल्क आदि) से बनाए जाते हैं और ज्यादा ड्यूरेबल और यूजर फ्रेंडली होते हैं।

■ घर पर देखभाल कैसे करें?

हाथ से बने हैंड नोटेड कारपेट के रखरखाव के लिए दो चीजें याद रखें। पहली, कारपेट को माह में दो बार अच्छे वैक्यूम क्लीनर से वैक्युमिंग कराएं और दूसरी, कारपेट को खुली जगह में ले जाकर हल्के से बिट करें। साल में एक बार प्रोफेशनल क्लीनिंग सर्विस अवश्य लें। जब भी कॉफी, दूध, चाय आदि कारपेट पर गिरे तो उसे रगड़कर हटाने की कोशिश न करें, बल्कि टिशु पेपर या कॉटन के कपड़े का इस्तेमाल कर उसे सोख लें और बिना रगड़े उठा लें। बाद में प्रोफेशनल क्लीनर से उसे क्लीन करा लें। कारपेट को साफ करने के लिए कभी भी किसी डिटर्जेंट या ब्लीचिंग एजेंट का इस्तेमाल न करें। कारपेट की जगह बदलती रहें। सीक से बने झाड़ू भी रोजाना धूल साफ करने के लिए काफी कारगर होते हैं।

■ खरीदते समय किन बातों का ध्यान रखें?

पहले यह तय करें कि आप किस तरह का कारपेट खरीदने जा रही हैं और बेड रूम, लिविंग रूम,

बच्चों के कमरे, किसके लिए कारपेट तलाश रही हैं। यदि आप लिविंग रूम के लिए कारपेट देख रही हैं तो इसके लिए अमूमन हैंड नोटेड ज्यादा अच्छा रहता है। बेडरूम के लिए भी थोड़े मुलायम, अच्छे दिखने वाले सिल्क के प्रीमियम हैंड नोटेड कारपेट अच्छे रहते हैं। कारपेट एरिया की नापजोख को लेकर सावधानी बरतें और उसके हिसाब से ही कारपेट खरीदें। बड़ा कारपेट हमेशा बेहतर रहता है, उसके ऊपर फर्नीचर कमरे को अच्छा लुक देता है। कारपेट के रंग घर के इंटीरियर को ध्यान में रखकर चुन सकती हैं। गुणवत्ता में ज्यादा फंदों वाले कारपेट महंगे जरूर होते हैं, लेकिन जितने ज्यादा फंदे होंगे, उतनी ही बढ़िया उसकी क्वालिटी होगी।

■ कारपेट को पहली बार किसने बनाया?

कारपेट मुगलों द्वारा भारत में लाया गया और तब से हस्तशिल्पियों का एक बड़ा वर्ग देश के कई हिस्सों में इसके जरिए अपनी आजीविका चलाता है। इसे एक तरह से धरोहर आर्ट कहा जा सकता है, क्योंकि पीढ़ी-दर-पीढ़ी यह कला कुछ जगह और लोगों की पहचान से जुड़ती चली गई।

■ देश में कहां-कहां इसके हस्तशिल्पी हैं?

जयपुर रग्स के अंतर्गत मैंने 40,000 हस्तशिल्पियों का नेटवर्क खड़ा किया है। गुजरात की वलसाड जनजाति से लेकर राजस्थान, उत्तर प्रदेश, झारखंड और बिहार के नक्सल प्रभावित इलाकों समेत 6 राज्यों के 600 से ज्यादा गांवों में कारपेट बनाने वाले हस्तशिल्पी अपनी कला को जिंदा रखे हुए हैं।